

# PAYAL KUMARI

05 Mar 2002

04:26 PM

Bokaro

Model: Web-MyKundli

Order No: 121583501

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 05/03/2002  
दिन \_\_\_\_\_: मंगलवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 16:26:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 25:52:28 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Bokaro  
राज्य \_\_\_\_\_: Jharkhand  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 23:51:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 86:02:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:14:08 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 16:40:08 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:11:35 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 03:32:13 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:05:00 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:50:12 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:45:12 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 20:48:11 कुम्भ  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 02:38:34 सिंह

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: सिंह - सूर्य  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: वृश्चिक - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: अनुराधा - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शनि  
योग \_\_\_\_\_: हर्षण  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मृग  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: कीटक  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ने-नैनी  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मीन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1923	फाल्गुन	14
पंजाबी	संवत : 2058	फाल्गुन	22
बंगाली	सन् : 1408	फाल्गुन	20
तमिल	संवत : 2058	मासी	21
केरल	कोल्लम : 1177	कुंभम	21
नेपाली	संवत : 2058	फाल्गुन	21
चैत्रादि	संवत : 2058	फाल्गुन	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2058	माघ	कृष्ण 7

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 19:06:30  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 22:16:29 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : हर्षण  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 20:30:50 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : हर्षण  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:30:21 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बव  
भयात \_\_\_\_\_ : 44:47:45  
भभोग \_\_\_\_\_ : 59:23:59  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शनि 4 वर्ष 7 मा 11 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : आश्विन  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रेवती  
योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
करण \_\_\_\_\_ : गर  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मकर  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
मंगल \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
बुध \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
गुरु \_\_\_\_\_ : मीन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मेष  
शनि \_\_\_\_\_ : कर्क  
राहु \_\_\_\_\_ : वृष

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

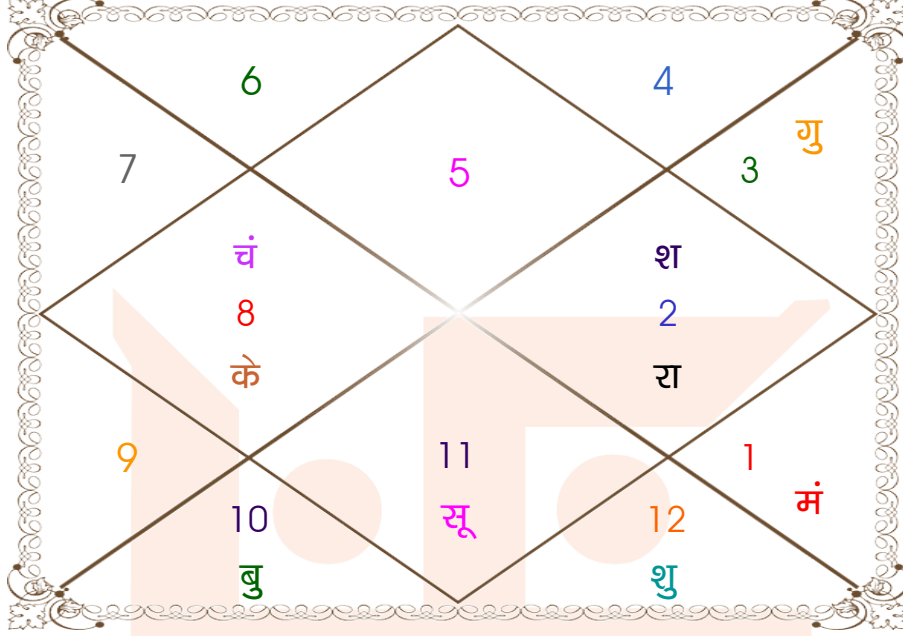
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

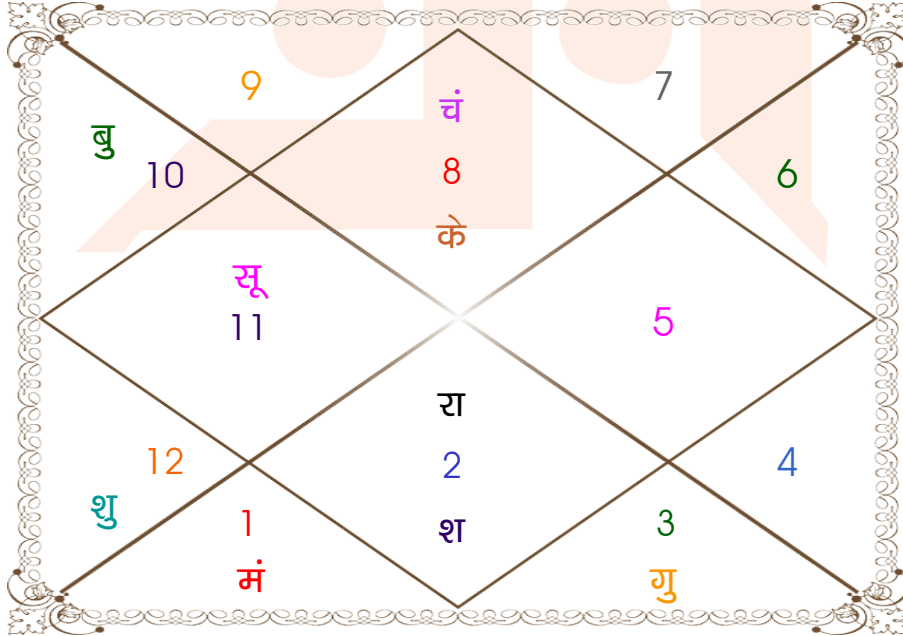
9835195382

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

शु	मं	रा श	गु
सू			
बु			ल
	के चं		

### लग्न कुंडली

रा श	मं	शु
गु		सू
		बु
ल		चं के

विंशोत्तरी  
शनि 4वर्ष 7मा 11दि  
शनि

05/03/2002

17/10/2107

शनि	15/10/2006
बुध	16/10/2023
केतु	15/10/2030
शुक्र	15/10/2050
सूर्य	15/10/2056
चन्द्र	15/10/2066
मंगल	15/10/2073
राहु	16/10/2091
गुरु	17/10/2107

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 11मा 19दि  
संकटा

22/02/2021

22/02/2029

संकटा	04/12/2022
मंगला	23/02/2023
पिंगला	04/08/2023
धान्या	04/04/2024
भ्रामरी	22/02/2025
भद्रिका	04/04/2026
उल्का	04/08/2027
सिद्धा	22/02/2029

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

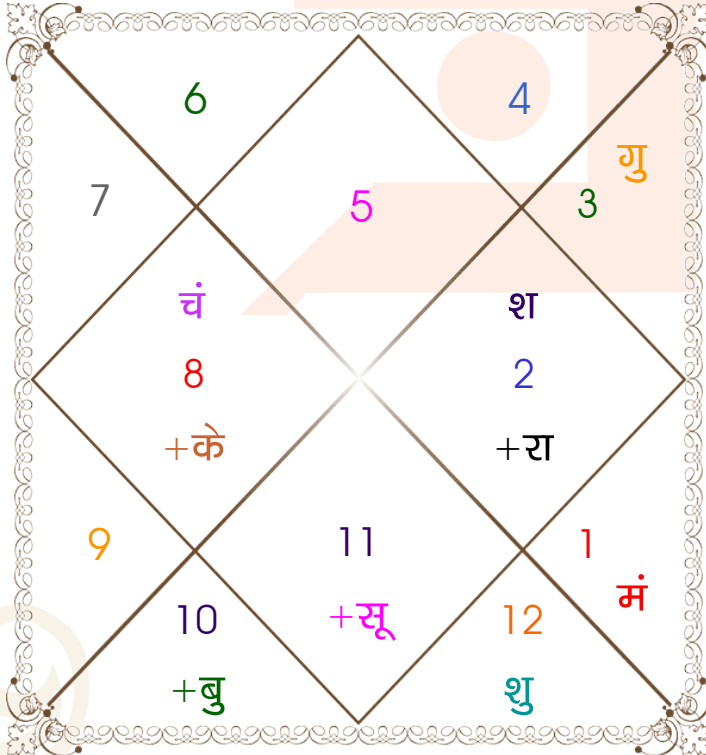
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	02:38:34	321:37:19	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	---
सूर्य			कुंभ	20:48:11	01:00:06	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			वृश्चि	13:25:44	13:21:19	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	नीच राशि
मंगल			मेष	08:49:33	00:42:24	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण
बुध			मक	26:39:27	01:22:37	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	गुरु	सम राशि
गुरु			मिथु	11:45:53	00:00:45	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	02:51:37	01:14:45	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	उच्च राशि
शनि			वृष	14:44:58	00:02:47	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
राहु	व		वृष	29:28:43	00:00:22	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	29:28:43	00:00:22	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	02:03:49	00:03:20	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	---
नेप			मक	15:52:31	00:01:57	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	---
प्लूटो			वृश्चि	23:40:52	00:00:31	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	मंगल	---
दशम भाव			वृष	01:30:26	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	--

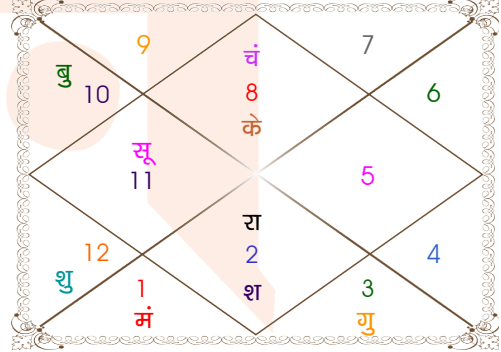
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:52:58

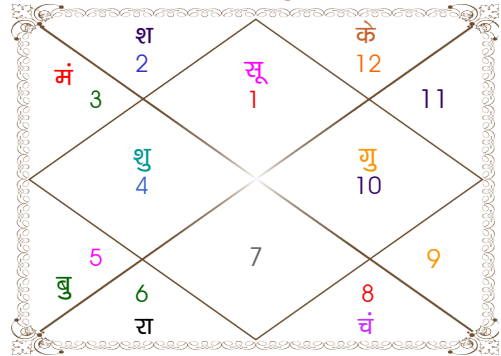
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 17:27:12	सिंह 02:38:34
2	सिंह 17:27:12	कन्या 02:15:51
3	कन्या 17:04:30	तुला 01:53:09
4	तुला 16:41:47	वृश्चिक 01:30:26
5	वृश्चिक 16:41:47	धनु 01:53:09
6	धनु 17:04:30	मकर 02:15:51
7	मकर 17:27:12	कुम्भ 02:38:34
8	कुम्भ 17:27:12	मीन 02:15:51
9	मीन 17:04:30	मेष 01:53:09
10	मेष 16:41:47	वृष 01:30:26
11	वृष 16:41:47	मिथुन 01:53:09
12	मिथुन 17:04:30	कर्क 02:15:51

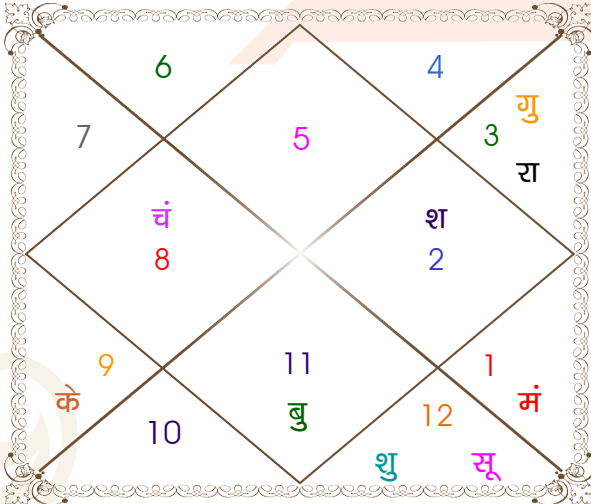
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	02:38:34
2	सिंह	29:24:13
3	कन्या	29:33:37
4	वृश्चिक	01:30:26
5	धनु	03:06:51
6	मकर	03:30:27
7	कुम्भ	02:38:34
8	कुम्भ	29:24:13
9	मीन	29:33:37
10	वृष	01:30:26
11	मिथुन	03:06:51
12	कर्क	03:30:27

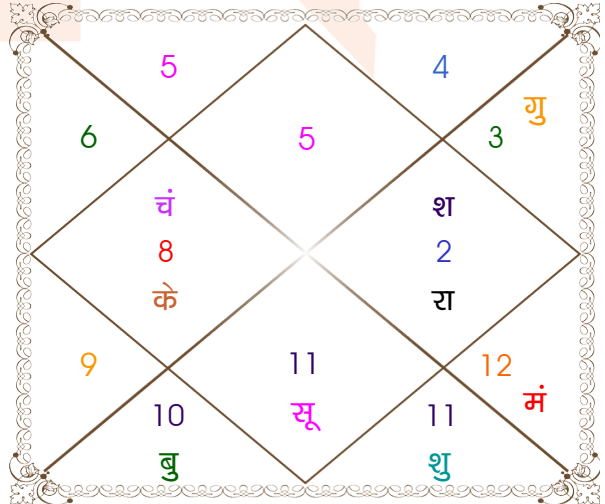
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 4 वर्ष 7 मास 11 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
05/03/2002	15/10/2006	16/10/2023	15/10/2030	15/10/2050
15/10/2006	16/10/2023	15/10/2030	15/10/2050	15/10/2056
00/00/0000	बुध 13/03/2009	केतु 13/03/2024	शुक्र 14/02/2034	सूर्य 02/02/2051
00/00/0000	केतु 10/03/2010	शुक्र 13/05/2025	सूर्य 14/02/2035	चंद्र 04/08/2051
00/00/0000	शुक्र 08/01/2013	सूर्य 18/09/2025	चंद्र 15/10/2036	मंगल 09/12/2051
00/00/0000	सूर्य 15/11/2013	चंद्र 19/04/2026	मंगल 15/12/2037	राहु 02/11/2052
00/00/0000	चंद्र 16/04/2015	मंगल 15/09/2026	राहु 15/12/2040	गुरु 21/08/2053
00/00/0000	मंगल 12/04/2016	राहु 03/10/2027	गुरु 16/08/2043	शनि 03/08/2054
05/03/2002	राहु 31/10/2018	गुरु 08/09/2028	शनि 15/10/2046	बुध 10/06/2055
राहु 03/04/2004	गुरु 05/02/2021	शनि 18/10/2029	बुध 15/08/2049	केतु 16/10/2055
गुरु 15/10/2006	शनि 16/10/2023	बुध 15/10/2030	केतु 15/10/2050	शुक्र 15/10/2056

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
15/10/2056	15/10/2066	15/10/2073	16/10/2091	17/10/2107
15/10/2066	15/10/2073	16/10/2091	17/10/2107	00/00/0000
चंद्र 15/08/2057	मंगल 14/03/2067	राहु 27/06/2076	गुरु 03/12/2093	शनि 19/10/2110
मंगल 16/03/2058	राहु 31/03/2068	गुरु 21/11/2078	शनि 15/06/2096	बुध 29/06/2113
राहु 15/09/2059	गुरु 07/03/2069	शनि 27/09/2081	बुध 21/09/2098	केतु 07/08/2114
गुरु 14/01/2061	शनि 16/04/2070	बुध 15/04/2084	केतु 28/08/2099	शुक्र 07/10/2117
शनि 16/08/2062	बुध 13/04/2071	केतु 04/05/2085	शुक्र 29/04/2102	सूर्य 19/09/2118
बुध 15/01/2064	केतु 09/09/2071	शुक्र 04/05/2088	सूर्य 15/02/2103	चंद्र 19/04/2120
केतु 15/08/2064	शुक्र 08/11/2072	सूर्य 28/03/2089	चंद्र 16/06/2104	मंगल 29/05/2121
शुक्र 16/04/2066	सूर्य 16/03/2073	चंद्र 27/09/2090	मंगल 23/05/2105	राहु 06/03/2122
सूर्य 15/10/2066	चंद्र 15/10/2073	मंगल 16/10/2091	राहु 17/10/2107	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 4 वर्ष 8 मा 2 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि
18/09/2025	19/04/2026	15/09/2026	03/10/2027	08/09/2028
19/04/2026	15/09/2026	03/10/2027	08/09/2028	18/10/2029
चंद्र 06/10/2025	मंगल 28/04/2026	राहु 12/11/2026	गुरु 18/11/2027	शनि 11/11/2028
मंगल 18/10/2025	राहु 20/05/2026	गुरु 02/01/2027	शनि 11/01/2028	बुध 08/01/2029
राहु 19/11/2025	गुरु 09/06/2026	शनि 03/03/2027	बुध 28/02/2028	केतु 31/01/2029
गुरु 17/12/2025	शनि 02/07/2026	बुध 27/04/2027	केतु 19/03/2028	शुक्र 09/04/2029
शनि 20/01/2026	बुध 24/07/2026	केतु 19/05/2027	शुक्र 15/05/2028	सूर्य 29/04/2029
बुध 19/02/2026	केतु 01/08/2026	शुक्र 22/07/2027	सूर्य 01/06/2028	चंद्र 02/06/2029
केतु 04/03/2026	शुक्र 26/08/2026	सूर्य 10/08/2027	चंद्र 29/06/2028	मंगल 26/06/2029
शुक्र 08/04/2026	सूर्य 03/09/2026	चंद्र 11/09/2027	मंगल 19/07/2028	राहु 25/08/2029
सूर्य 19/04/2026	चंद्र 15/09/2026	मंगल 03/10/2027	राहु 08/09/2028	गुरु 18/10/2029

केतु - बुध	शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल
18/10/2029	15/10/2030	14/02/2034	14/02/2035	15/10/2036
15/10/2030	14/02/2034	14/02/2035	15/10/2036	15/12/2037
बुध 09/12/2029	शुक्र 06/05/2031	सूर्य 04/03/2034	चंद्र 06/04/2035	मंगल 09/11/2036
केतु 30/12/2029	सूर्य 06/07/2031	चंद्र 04/04/2034	मंगल 11/05/2035	राहु 12/01/2037
शुक्र 28/02/2030	चंद्र 16/10/2031	मंगल 25/04/2034	राहु 11/08/2035	गुरु 10/03/2037
सूर्य 18/03/2030	मंगल 26/12/2031	राहु 19/06/2034	गुरु 31/10/2035	शनि 16/05/2037
चंद्र 17/04/2030	राहु 25/06/2032	गुरु 06/08/2034	शनि 04/02/2036	बुध 15/07/2037
मंगल 08/05/2030	गुरु 05/12/2032	शनि 03/10/2034	बुध 01/05/2036	केतु 09/08/2037
राहु 02/07/2030	शनि 15/06/2033	बुध 24/11/2034	केतु 05/06/2036	शुक्र 19/10/2037
गुरु 19/08/2030	बुध 05/12/2033	केतु 15/12/2034	शुक्र 14/09/2036	सूर्य 10/11/2037
शनि 15/10/2030	केतु 14/02/2034	शुक्र 14/02/2035	सूर्य 15/10/2036	चंद्र 15/12/2037

शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु
15/12/2037	15/12/2040	16/08/2043	15/10/2046	15/08/2049
15/12/2040	16/08/2043	15/10/2046	15/08/2049	15/10/2050
राहु 28/05/2038	गुरु 24/04/2041	शनि 15/02/2044	बुध 11/03/2047	केतु 09/09/2049
गुरु 22/10/2038	शनि 25/09/2041	बुध 28/07/2044	केतु 10/05/2047	शुक्र 19/11/2049
शनि 13/04/2039	बुध 10/02/2042	केतु 03/10/2044	शुक्र 30/10/2047	सूर्य 10/12/2049
बुध 15/09/2039	केतु 08/04/2042	शुक्र 14/04/2045	सूर्य 21/12/2047	चंद्र 15/01/2050
केतु 18/11/2039	शुक्र 17/09/2042	सूर्य 11/06/2045	चंद्र 16/03/2048	मंगल 09/02/2050
शुक्र 19/05/2040	सूर्य 05/11/2042	चंद्र 15/09/2045	मंगल 15/05/2048	राहु 14/04/2050
सूर्य 13/07/2040	चंद्र 25/01/2043	मंगल 22/11/2045	राहु 17/10/2048	गुरु 10/06/2050
चंद्र 12/10/2040	मंगल 23/03/2043	राहु 14/05/2046	गुरु 04/03/2049	शनि 16/08/2050
मंगल 15/12/2040	राहु 16/08/2043	गुरु 15/10/2046	शनि 15/08/2049	बुध 15/10/2050

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 5, 9
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

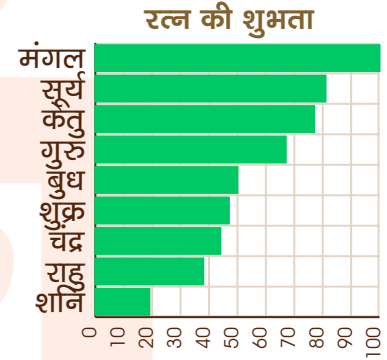
9835195382

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	81%	दम्पति, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	77%	सुख, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	67%	धनार्जन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
पन्ना	बुध	50%	शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	47%	दुर्घटना, व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	44%	ग्रह कलेश, व्यय
गोमेद	राहु	38%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना
नीलम	शनि	19%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	15/10/2006	69%	19%	89%	56%	67%	55%	44%	50%	64%
बुध	16/10/2023	88%	19%	100%	62%	67%	55%	19%	38%	77%
केतु	15/10/2030	69%	19%	100%	50%	67%	55%	0%	12%	89%
शुक्र	15/10/2050	69%	19%	100%	56%	67%	61%	31%	50%	83%
सूर्य	15/10/2056	94%	53%	100%	50%	73%	22%	0%	12%	64%
चंद्र	15/10/2066	88%	59%	100%	56%	67%	47%	19%	12%	64%
मंगल	15/10/2073	88%	53%	100%	25%	73%	47%	19%	12%	83%
राहु	16/10/2091	69%	19%	89%	50%	67%	55%	31%	56%	64%
गुरु	17/10/2107	88%	53%	100%	25%	80%	22%	19%	38%	77%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।



**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## ग्रह फल

### सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रुचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

### चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

## मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

## बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

## गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्ब्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

## शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छ और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

### शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

### राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

### केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु  
( 16/10/2023 - 15/10/2030 )

केतु की महादशा 16/10/2023 को आरम्भ और 15/10/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। केतु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पहले आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपकी यात्रा, व्यय, अवांछित परिवर्तन, और सगे संबंधियों की सहायता मिली होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको ख्याति, प्रगति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप आशावादी होंगे और स्वयं को स्फूर्तिवान तथा सक्रिय महसूस करेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको पित्तदोष, फोड़ा-फुन्सी, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, छाती से संबंधित बीमारी, मूत्राशय की समस्या, वृक्कशोथ की बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सतर्कता से इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको माता पिता से लाभ हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार में अच्छी आय होगी, विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे। जीविका के लिये विधि, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, सम्पर्क-कार्य, प्रबन्धन, ग्राफिक कला, ललित कला, विमान-विज्ञान, शिक्षण, परिष्कृत कला आदि का चयन कर सकते हैं। वस्त्र, चमड़े, रबड़, प्लास्टिक, मवेशी, अनाज, फल, सोने, चाँदी, कलाकृतियों आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि, सम्मान और लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा मनोकामना पूरी होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, कार्य-व्यवसाय से सम्बन्धित यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी। यह दशा आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा। आप नयी गाड़ी खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के मामले तूल पकड़ेंगे और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी-बड़ी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप विद्यालय बदल सकते हैं। आप परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। दवा, कम्प्यूटर विज्ञान, परिष्कृत कला, विधि, व्यापार प्रबंधन, बैंकिंग, होटल प्रबंधन आदि में आपकी रुचि होगी। आप संतुलित और समझदार हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्ग दर्शन की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को यश और ख्याति प्राप्त होगी और जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। आपके पड़ोसी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को यश और ख्याति की प्राप्ति और उन्नति होगी। आपका उनके साथ कुछ मतान्तर हो सकता है। आपके पिता के जीवन में परिवर्तन और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को लाभ मिलेगा और उन्नति होगी जबकि बड़ों को विरोधियों पर विजय, ननिहाल से सहायता और प्रतिस्पर्धा में सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको गृह-सुख, उत्तम शिक्षा, यश और ख्याति मिलेगी। शुक्र के फलस्वरूप आपको आराम और सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सगे संबंधियों से सहायता मिलेगी जबकि चन्द्र की दशा में लाभ और पारिवारिक आनन्द मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान स्वास्थ्य के खराब होने, विरोध और सम्पत्ति-लाभ की सम्भावना है। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपका विवाह होगा, जीविका में प्रगति और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, पिता से लाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि होगी। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र  
( 18/09/2025 - 19/04/2026 )**

आपके लिए केतु महादशा 16/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 18/09/2025 से प्रारंभ होकर 19/04/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। माता से मधुर संबंध होंगे। अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है। वाहन सुख संभव है। परिवार से जुड़ कर रहेंगे। शिक्षा और ज्ञानार्जन में सफल रहेंगे। नेकी और समाज सेवा के कार्य करेंगे।

आपके जीवनसाथी सफल, लोकप्रिय, धनी और प्रसन्न होंगे। आपके पिता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं; उनकी अध्यात्म में रुचि होगी। आपकी माता सफल रहेंगी ; धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, सुखी घरेलू जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को अधिक परिश्रम करना होगा, उनके कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, यात्रा संभव है, खर्च बढ़ेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा, धनार्जन उत्तम होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; श्वसन तंत्र की कोई शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चांदी, दूध, चावल और मिश्री दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - मंगल  
( 19/04/2026 - 15/09/2026 )**

आपके लिए केतु की महादशा 16/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 19/04/2026 को प्रारंभ होकर 15/09/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चकोटि का बौद्धिक कार्य कर सकते हैं, दूसरों पर आपका बहुत प्रभाव होगा विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाग्य साथ देगा, धनी बनेंगे। यात्राएं हो सकती हैं, अचल संपत्ति के मालिक बन सकते हैं। कला में रुचि होगी, साहसी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगी, साहस में वृद्धि होगी, उत्साही रहेंगे, कार्य पूर्ण होंगे। आपके पिता विश्वासी और उत्साही होंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, बाधाएं पार करेंगी, मुकदमे में जीत होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, व्यापार में लाभ का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, सफलता मिलेगी, तकनीकी विषयों में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**  
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382  
9835195382

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

**अंतर्दशा :- केतु - राहु  
( 15/09/2026 - 03/10/2027 )**

आपके लिए केतु महादशा 16/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 15/09/2026 को प्रारंभ होकर 03/10/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध बनेंगे। समाज की भलाई का कार्य करेंगे। विदेशियों से संपर्क या लेन-देन संभव है। शिक्षा उत्तम होगी; माता से मधुर संबंध रहेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। वाहनसुख की संभावना है। भूमि से आय में वृद्धि होगी। भौतिक सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध बनेंगे। आपके पिता धन का संचय करेंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन, अचानक धनागम, विरासत से लाभ, अधिक खर्च का संकेत है। आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले वस्त्र, सतनजा और उड़द की दाल का दान करें।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे और धनी बनेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनिवार को शिवजी की उपासना भैरव रूप में करें।

**अंतर्दशा :- केतु - गुरु  
( 03/10/2027 - 08/09/2028 )**

आपके लिए केतु महादशा 16/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 03/10/2027 को प्रारंभ होकर 08/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**  
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। भाई-बहनों और चाचा से उत्तम संबंध होंगे। प्रभावशाली मित्र होंगे। संतान से सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा, व्यापार में लाभ होगा। संचार माध्यम और लघु यात्राओं से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। माता के जीवन में परिवर्तन आ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य और धन का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली होगी, उन्हें साझेदारी से लाभ होगा। अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए केसर, हल्दी, चने का दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - शनि  
( 08/09/2028 - 18/10/2029 )**

आपके लिए केतु महादशा 16/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 08/09/2028 को प्रारंभ होकर 18/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध बनेंगे। व्यापार में लाभ होगा, प्रसिद्ध बनेंगे, प्रोन्नति होगी, सम्मान बढ़ेगा, कार्यक्षेत्र की उपलब्धियों को मान्यता मिलेगी। तीर्थयात्रा हो सकती है। आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, शिक्षा में सफल होंगे, व्यापार में लाभ होगा। यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, धनी बनेंगे। आपके पिता की आय में वृद्धि होगी। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित घटनाएं, यात्रा, खर्चे और कुछ परिवर्तन का संकेत है। आपकी संतान को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सहकर्मियों और अधीनस्थों का सहयोग मिलेगा।

भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों का मुनाफ़ा बढ़ेगा, निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए काले तिल, तेल, दाल और काले जूते दान करें।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**महादशा :- शुक्र  
( 15/10/2030 - 15/10/2050 )**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 15/10/2030 को आरंभ होकर 15/10/2050 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात् अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्र पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते हैं अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र  
( 15/10/2030 - 14/02/2034 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/10/2030 को प्रारंभ होकर 15/10/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 15/10/2030 को प्रारंभ होकर 14/02/2034 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। वाहन आदि सभी सुख उपलब्ध रहेंगे। अत्यधिक संवेदनशील हो सकते हैं, अतः भावनाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें और निम्न उपाय करें :

- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382